Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

अमरकांत का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक अध्ययन

Sunita Devi*

Lecturer of Hindi, G. S. S. S. Gudha, Mohindergarh

सार ***– उत्तर प्रदेश के सबसे पूर्वी जिले बलिया में एक तहसील है ‘रसड़ा’ । इस रसड़ा तहसील के सुपरिचित गाँव ‘नगरा’ से सटा हुआ एक छोटा-सा गाँव है- ‘भगनलपुर’ । भगनलपुर गाँव तीन टोलों में बंटा है। गाँव के बीचों-बीच कायस्थों के तीन परिवार रहते थे। इन्हीं कायस्थ परिवारों में से एक परिवार था सीता राम वर्मा व भनन्ती देवी का। इन्हीं के पुत्र के रूप में 1 जुलाई, 1925 को अमरकांत का जन्म हुआ। अमरकांत का नाम श्रीराम रखा गया। इनके खानदान में लोग अपने नाम के साथ ‘लाल’ लगाते थे। इसलिए अमरकांत का नाम भी ‘श्रीराम लाल’ हो गया। बचपन में ही किसी साधू-महात्मा द्वारा एक और नाम रखा गया था, वह नाम था- ‘अमर नाथ’ । यह नाम अधिक प्रसिद्ध न हो सका, किन्तु स्वयं श्री रामलाल को इस नाम के प्रति अलगाव हो गया। इसलिए उन्होंने कुछ परिवर्तन करके अपना नाम ‘अमरकांत’ रख लिया। अपनी साहित्यिक कृत्तियाँ इसी नाम से प्रसिद्ध हुई।***

अपने नामकरण की चर्चा करते हुए स्वयं अमरकांत जी ने लिखा है कि ‘‘मेरे खानदान के लोग अपने नाम के साथ ‘लाल’ लगाते थे। मेरा नाम भी ‘श्री रामलाल’ ही था। लेकिन अब हम लोग बलिया शहर में रहने लगे तो चार-पाँच वर्ष बाद वहाँ अनेक कायस्थ परिवारों में ‘लाल’ के स्थान पर ‘वर्मा’ जोड़ दिया गया और मेरा नाम भी ‘श्री राम वर्मा’ हो गया। ऐसा क्यों किया गया, इसे उद्घाटित करने के लिए भारत के बहुत से जातिवादी कचरे को उल्टना-पल्टना पड़ेगा।’’

---------------------------------X--------------------------------

शिक्षा:

अमरकांत जी की बुनियादी शिक्षा बलियां में ही हुई। बुनियादी शिक्षा के बाद इन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और वहाँ से बी.ए. की कक्षा उतीर्ण की। साहित्य के प्रति इनका घनिष्ठ लगाव था। अपना जीवनयापन करने के लिए व्यवसाय के बारे में सोचना शुरू किया। शिक्षण में अत्याधिक सक्षम होने के कारण शिक्षा के साथ-साथ इन्होंने जीवन यापन हेतु पत्रकारिता के क्षेत्र में अपने व्यवसाय को खोजा। साहित्यिक कार्य भी निर्बाध चलता रहा।

व्यक्तित्व:

जिन व्यक्तियों ने निकट से देखा और परखा है, उनका मानना है कि वह बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। अपने विद्यार्थी जीवन से ही वे अत्यन्त परिश्रमी, मेधावी, विनम्र और सुशील विद्यार्थी रहे हैं। स्वभाव से वह अत्यन्त सहृदय हैं।[1] उनका व्यक्तित्व बहुत भव्य और सुदर्शन है जो प्रथम दर्शन से ही अपनी और आकर्षित करने लगते हैं।

इनके व्यक्तित्व को साहित्यकार और पत्रकार का समन्वित रूप कहा जा सकता है। इनकी दृष्टि में सभी जन समान हैं। सभी वर्ग को इन्होंने अपने साहित्य में समान स्थान दिया है।

इस दृष्टि से इनकी ‘कम्युनिष्ट’ कहानी का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। अपने जीवन के अनेक उतार-चढ़ावों से संघर्ष करते हुए अपनी जीवन में स्थिरता को प्राप्त किया। जीवन में आने वाले कष्टों, दुःखों व सुखों ने इनको संवेदनशील बना दिया।

विकट परिस्थितियों में भी इन्होंने अपने व्यक्तित्व को स्वर्ण के समान पवित्र बनाऐ रखा। स्वतन्त्रता के लिए हो रहे आन्दोलनों व जीवन संघर्ष के लिए उन्होंने विपरीत परिस्थितियों का सामना डट कर किया। ये हमेशा दुव्र्यस्नों से दूर रहे और समाज में भी साहित्य के माध्यम से दुव्र्यस्नों का

---

[1] नया ज्ञानोदय (अमर कांत, मेरे बचपन का आखिरी दिन (मई 2010), पृष्ठ 20

विरोध करके समाज को जागरूक किया। इन्होंने सन 1942 में स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया।[2]

संस्कार:-

अपने माता-पिता से प्राप्त संस्कारों का ही परिणाम है कि वे इस भाग दौड़ की जिंदगी व समाज में हो रही चकाचैंद से हमेशा ही अछूते रहे। जुआ, मदिरापान और अन्य प्रकार के नशों से हमेशा ही दूरी बनाए रखी। यह संस्कार ही है कि इन्होंने कभी भी अपने धैर्य को टूटने नहीं दिया और साहित्य के मार्ग पर बाधाओं का डट कर सामना करते हुए, इस प्रसिद्धी व सम्मान के उच्च शिखर पर पहुंचे। साहित्य के पथ पर चलते हुए इन्होंने अपना व अपने माता-पिता का व अपने कुल के गौरव को बढ़ाया।

इनका निम्न वर्ग के साथ विशेष लगाव रहा है क्योंकि अपने साहित्य में इन्होंने गरीबों के कष्टों को और उनके हितों के लिए आवाज उठाई है। समाज में फैली कुरीतियों को नष्ट करने में विशेष सहयोग दिया है। इसी कारण साहित्य के क्षेत्र में इनका विशेष स्थान है।

परिवेश एवं परिस्थितियाँ:

अमरकांत जी का पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश पूर्णतः सहयोगपूर्ण था। परिवार से व समाज से ही इनको जीवन से संघर्षों से सूझने की प्रेरणा मिलती रही। इन्होंने कायस्थ परिवार में जन्म होने के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर भी दुःखों का सामना करते हुए अपने जीवन में स्थिरता बनाए रखी। स्वतन्त्रता संघर्षों के चलते अपने साहित्य सृजन के कार्यों को सुचारू रूप से करते रहे। परिस्थितियाँ विकट होते हुए भी ये अपने लक्ष्य से टस से मस नहीं हुऐ।

इनकी विचारधारा बड़ी ही सरल व सोमय है। इन्होंने समाज में फैली कुरीतियों को, राजनीतिक वातावरण को, आर्थिक विस्मता को, धार्मिक आडम्बरों को सभी को अपने साहित्य का विषय बनाया है। इन्होंने अपने मनोभावों को पत्रकारिता एवं साहित्य के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

कृत्तिव:

अमरकांत जी ने अपने साहित्यिक क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त किया है। इन्होंने साहित्यिक क्षेत्र में प्रचार व साहित्य सृजन किया है। इनकी रचनाओं में कहानियां, उपन्यास, बाल साहित्य आदि है। यद्यपि इन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त है।

उपन्यास:

अमरकांत जी ने अनेक विषयों पर लेखनी चलाई है विशेष रूप से इन्होंने गद्य के क्षेत्र में विशेष दक्षता प्राप्त है। आगरा से प्रकाशित होने वाले 'सैनिक' अखबार से जुड़कर इन्होंने कहानियां लिखने की प्रेरणा प्राप्त की। तत्पश्चात इन्होंने 'अमृत' और 'कहानी' पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। इनके पाँच कहानी संग्रह, छः उपन्यास और एक बाल उपन्यास अभी तक प्रकाशित हुए हैं। 'सुखा पत्ता' और 'ग्राम सेविका' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। इनके इलावा कुछ उपन्यास निम्न हैं:-

'काले-उजले दिन', 'कटीली राह के फूल', 'सुखजीवी', 'बीच की दीवार', 'सुन्नर पांडे की फतोह', 'आकाश पक्षी', 'इन्हीं हथियारों से', आदि।

अधिकतर उपन्यासों में शोषित वर्ग के जीवन को ही उकेरा है। इन्होंने अपने उपन्यासों में नए विचारों को भी स्थान दिया है। मानवता के बीच उत्पन्न होती खामियों को दिखाने का प्रयास किया है।

कहानी संग्रह:

कहानी संग्रह के क्षेत्र में भी अमरकांत जी ने विशेष योगदान दिया है। इनकी कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में भी समय-समय पर प्रकाशित होती रहती हैं। 'जिन्दगी और जोंक' एक ऐसी कहानी है जहां गरीबों के साथ हो रहे अत्याचार को प्रदर्शित करती है। 'एक धनी व्यक्ति का बयान' में धनी व्यक्तियों के गरीब व्यक्तियों के प्रति व्यवहार को दिखाने वाली कहानी है। इनके अतिरिक्त अन्य कहानियाँ हैं:- 'देश के लोग', 'मौत का नगर', 'मित्र मिलन तथा अन्य कहानियाँ', 'कुहासा', 'तूफान', 'कलाप्रेमी', 'प्रतिनिधि कहानियाँ', 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ', 'छिपकली-, 'डिप्टी कलैक्टरी', 'सुख और दुःख का साथ', 'अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ (दो खंडों में)'। उल्लेखनीय है कि अमरकांत की 'जिंदगी और जोंक' 'दोपहर का भोजन' अत्यन्त लोकप्रिय कहानियाँ हैं।

बाल साहित्य:

अमरकांत जी ने बच्चों के लिए भी बहुत सुन्दर कहानियाँ लिखी हैं, बाल साहित्य की निम्न पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं:- 'नेऊर भाई', 'वानर सेना', 'खूंटा में दाल है', 'सुग्गी चाची का गाँव', 'झगरू लाल का फैसला', 'एक स्त्री का सफर', 'बाबू का फैसला' आदि।

---

[2] नया ज्ञानोदय(अमरकांत, मेरे बचपन का आखिरी दिन, मई 2010)ए पृ. 22

पुरस्कार और सम्मान:

अमरकांत जी को अपने उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त किए। विशेष रूप से इनको हिन्दी व साहित्य के क्षेत्र में दिये गये विशेष योगदान के कारण इनको 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग का सम्मान' व 'साहित्य अकादमी' से पुरस्कृत किया गया है। अमरकांत जी ने इनके अतिरिक्त, 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार', 'मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार', 'यशपाल पुरस्कार', 'जन्म-संस्कृति सम्मान', 'मध्य प्रदेश का 'अमरकांत कीर्ति', सम्मान से नवाजा गया है। इनका एक उपन्यास है - 'इन्हीं हथियारों से' के लिए भी पुरस्कृत किया गया है।

इन सबके अतिरिक्त अमरकांत जी को विदेशी भाषाओं का भी ज्ञान था। प्रादेशिक भाषाओं का भी उनको ज्ञान था। इनकी कहानियों का प्रकाशन 'पेंग्विन इंडिया' में भी हो चुका है। इनकी कहानियों पर फिल्में भी बन चुकी हैं और दूरदर्शन पर भी प्रसारण हो चुका है और रंगमंच पर इनकी कहानियों का नाट्य रूपान्तरण का भी प्रदर्शन हो चुका है। अमरकांत जी बहुप्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व हैं।

निष्कर्ष:

अन्ततः कहा जा सकता है कि अमरकांत का व्यक्तित्व बहुमुखी और बहुआयामी रहा है। इनका सारा जीवन सक्रियता एवं संघर्ष का रहा है। उनका आरम्भिक जीवन भले ही अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा हो परन्तु उन्होंने धैर्य और साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन को हर क्षण साहसपूर्ण व्यतीत किया। इनका साहित्य भारतीय जनमानस की आंतरिक व बाह्य भावनाओं और परिवेश का सुन्दर चित्रण करता है।

समाज, शासन, धर्म, संस्कृति, व्यवस्था में विसंगतियों को उजागर करना, आतंक और आततायों की पहचान करवाना, मौन को वाणी देना इनके साहित्य सृजन का लक्ष्य रहा है। समानता की भावनाओं को मन में पालना और आततायों का नाश करना इनके जीवन का ध्येय रहा है।

अमरकांत जी के साहित्य में भाषा और संवादों में स्वाभाविकता है। अमरकांत जी के उपन्यास यथार्थ के निकट हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों का केन्द्र बिन्दु निम्न-मध्य वर्ग को बनाया है। निम्न मध्यम वर्गीय संवेदना को उन्होंने पूरी मनोवैज्ञानिकता से चित्रित किया है। शोषित पात्रों और उनके समस्त परिवेश को उन्होंने अपने साहित्य में मूर्तिमान किया है। इसमें आर्थिक विपन्नता से जूझता वर्ग, नारी का दोहरा शोषण, शोषित व्यक्ति का चरित्र, निरीहता और ओछापन, समाज की विभिन्न विद्रूपताओं का पूर्ण चित्रण है। 'कटीली राह के फूल' उपन्यास को निम्न मध्यम वर्ग का प्रमाणिक दस्तावेज भी कहा जा सकता है।

सन्दर्भ-ग्रंथ सूची

1. डॉ. आत्माराम, इक्कीसवीं सदी में शिक्षा अखिल भारती, 3014 चर्खेवालान, दिल्ली-110006
2. गोपाल कृष्ण अग्रवाल, मानव समाज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. गोपाल कृष्ण अग्रवाल, सामाजिक विघटन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1972
4. जी.आर. मदान, समाज शास्त्र के सिद्धान्त, सरस्वती सदन, 7 यू.ए. नगर, दिल्ली-1969
5. डॉ. डी. एल. शर्मा, शिक्षा तथा भारतीय समाज, सूर्य पब्लिकेशन बध्व आर लाल बुक डिपो, सप्तम संशोधित संस्करण-2007 (निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज), मेरठ-250001

Corresponding Author

Sunita Devi*

Lecturer of Hindi, G. S. S. S. Gudha, Mohindergarh

sunitabrp1982@gmail.com